लेख

उत्तराखंड की व्यावसायिक कृषि में नवाचार का एक प्रयोग टिहरी जनपद में रोतों की -बेली का विशेष अध्ययन

किरन त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय भूपतवाला हरिद्वार, भारत

परिचय

भारत कृषि प्रधान देश ही रहेगा और इसके अनुरूप हिमालयी राज्यों में भी कृषि ,उद्यानकी, पशुपालन आदि प्राथमिक क्षेत्र का महत्व बना रहना चाहिए| पिछले दो-तीन दशकों में उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि उद्यानिकी पशुपालन क्षेत्र में लगातार ह्रासमान परिस्थितियां बन रही है| पौड़ी गढ़वाल जनपद, अलकनंदा भागीरथी घाटियों में आधुनिक कृषि व्यवसायिक कृषि विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियां उपलब्ध नहीं हो पा रही है| न्यूनतम उत्पादकता और बाह्य प्रवास पोषित आजीविका के विकल्प उपलब्ध होना, साथ ही आंतरिक भागों से बाह्य हिमालय क्षेत्र में स्थायी निवास स्थानांतरण की बढ़ती प्रवृत्ति, अतीत में जीवन निर्वाह कृषि में प्रचलित कृषि व्यवस्था के लिए आवश्यक तात्कालिन प्रस्तुतियों का वर्तमान में न तो उपलब्ध हैं, न विकल्प हैं, और न प्रासंगिकता हैं | जनसंख्या घनत्व बढ़ने पर बाह्य प्रवास हुआ, शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी, पारिवारिक श्रम में कमी का प्रभाव कृषि- पशुपालन पर प्रतिकूल हुआ, इसके फलस्वरुप पारंपरिक कृषि व्यवस्था के प्रति उदासीनता का वातावरण बनता गया| गंगा घाटी के विपरीत यमुना घाटी में जहां कहीं भी भौगोलिक परिस्थितियां अनुकूल है, व्यावसायिक कृषि पशुपालन का विकास समुचित रूप में हुआ है| और कृषि आर्थिकी में आशा की किरण बन अन्य क्षेत्रों में जहां कहीं भी कृषि के लिए आदर्श परिस्थितियां हैं एक प्रेरणा का स्रोत है| प्रस्तुत विवरण आधुनिक डेयरी,बागवानी कृषि के व्यावसायिक स्वरूप का परिचायक है| यह विवरण नितांत प्राथमिक गुणात्मक सूचनाओं पर आधारित है| अलकनंदा भागीरथी नदियों की सहायक घाटियों में जहां सिंचाई के स्रोत हैं कृषि मरूद्यान मिलते हैं| कुछ नवाचार भी हो रहा है और उत्पादन भी समुचित है| इसका एक उदाहरण अगस्तमुनि विकासखंड में क्यूँजा, बाबई ग्राम है| अनुमानत:50 वर्ग किलोमीटर राजस्व क्षेत्र में ऐसा एक ग्राम मिलने की संभावना रहती है| टिहरी जनपद में सिंचित भूमि का प्रतिशत अधिक रहने के कारण कृषि मध्यम स्तरीय मानी जा सकती है| कृषि संबंधी शोध कार्यों का प्रचलन भी कम है। इन परिस्थितियों के रहते हुए यमुना जल प्रवाह क्षेत्र में विशेष रूप से कुछ स्थानों पर व्यावसायिक कृषि फलोंत्पादन द्वारा कृषि भूमि से उत्पादन का स्तर बढ़ता दिखाई दे रहा है, इसी श्रृंखला में जौनपुर विकासखंड के रोतों की -वेळी गांव को अध्ययन के लिए चयनित किया गया है।

ग्राम की स्थिति अवस्थित - रोतों की- बेली गांव उत्तराखंड के टिहरी जनपद के जौनपुर विकासखंड में लघु हिमालय के बाह्य पृष्ठ क्षेत्र में 30 डिग्री 45 मिनट उत्तरी अक्षांश व 78 डिग्री 8 सेकंड पूर्वी देशांतर पर समुद्र तल से 1826 मीटर की ऊंचाई में मसूरी से 17 किलोमीटर उत्तर पूर्व में देहरादून उत्तरकाशी मार्ग पर 175.4 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसकी जनसंख्या 2011 में 1116 व्यक्ति थी, रोतों की- वेली गांव ने व्यावसायिक कृषि फसलों पशुपालन से डेयरी उत्पादन एवं पर्यटन विकास कर रोजगार के नये आयाम स्थापित कर उत्तराखंड में अपनी पहचान बनायी है|

भौगोलिक स्वरूप- लघु हिमालय में 1826 मीटर की ऊंचाई पर स्थित होने के कारण तीव्र ढाल होना स्वाभाविक है| गांव सूर्योनुखी ढाल पर स्थित है, इसके ऊपरी भाग में तीव्र ढाल तथा निचले भाग में ढाल मध्यम है|ऊंचाई अधिक होने के कारण शीत ऋतु कठोर व ग्रीष्म ऋतु सुहाबनी रहती है| ऊपरी भागों में शीतोष्ण कटिबंधीय सघन वनस्पति के कारण आद्रता पूरे वर्ष भर बनी रहती है, जिसका प्रभाव यहां के कृषि उत्पादन पर स्पष्ट दिखाई देता है| गांव की ऊपरी भाग में मिट्टी हल्की भूरी तथा दक्षिण भाग में गहरी

भूरी मिट्टी पाई जाती है| गांव के मध्य भाग में वनस्पति पर मानवीय अतिक्रमण अधिक होने के कारण सघनता कम मिलती है, लेकिन ऊपरी भागों में बांज, बुरांश,देवदार,चिल्दी, के वृक्षों में सघनता पाई जाती है| निचले भागों में चीड़ के वृक्ष भी सघन रूप में फैले हैं|

जनांनिकी संरचना - रोतों की बेली गांव में मुख्य रूप से रावत भंडारी राजपूतों व कुछ अनुसूचित जाति के परिवार निवास करते हैं| वर्तमान समय में परिवारों की संख्या 182 है| 2011में यहां की जनसंख्या 1116 है| जिसमें पुरुषों की संख्या 528 तथा महिलाओं की संख्या 588 थी| जनसंख्या का लिंगानुपात 1114 स्त्री प्रति हजार पुरुष तथा साक्षरता 81.4 थी, अनुसूचित जाति की जनसंख्या 57, क्रियाशील जनसंख्या 594, मुख्य कृषक 534 ,सीमांत श्रमिक 20, सीमांत कृषक 5, थे| कामकाजी महिलाएं 267, 0-6 आयु वर्ग के 161 बच्चे थे| इस ग्राम में स्थाई प्रवास का प्रतिशत अनुपस्थित है| रोजगार के लिए अल्प अवधि के लिए आवा-गमन होता रहता है|

विकास के अनुकूल कारक - रोतों की- बेली गांव की स्थिति देहरादून मसूरी धनोल्टी के समीप रहने एवं स्वास्थ्यवर्धक जलवायु के कारण यहां पर विकास के लिए अनुकूल दशाएं विद्यमान हैं| शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में होने के कारण ग्रीष्म ऋतु में मौसमी सब्जियों का अच्छा उत्पादन होता है, इनमें गोभी, मूली, बीन्स, मटर,आलू मुख्य हैं| ऊपरी भाग में बन्य संसाधनों की पर्याप्तता का प्रभाव यहां के पशुपालन पर स्पष्ट दिखाई देता है| वर्तमान समय में प्रत्येक परिवार ने दुधारू पशुओं के दुग्ध से पनीर का उत्पादन कर व्यवसायीकरण की दिशा में अच्छी पहल की है|

पनीर उत्पादन -रोतों की -बेली गांव ने स्वरोजगार के संसाधनों में पशुपालन से पनीर उत्पादन का कार्य कर उत्तराखंड में अपनी अलग पहचान बनायी है, यहां का पनीर अत्यधिक स्वादिष्ट एवं शुद्ध होने के कारण मसूरी तथा उसके समीप पर्यटक केन्द्रो में अपनी मांग बना चुका है| 1975- 76 में सड़क निर्माण के बाद पशुपालन से उपलब्ध दुग्ध का व्यवसाय मसूरी -देहरादून क्षेत्र के लिए किया जाता था, तत्पश्चात 1980 में यहां के विकासखंड प्रमुख के द्वारा सबसे पहले पनीर उत्पादन का कार्य प्रारंभ किया गया। दूध की अपेक्षा पनीर के मूल्य में अधिक तथा लंबे समय तक सुरक्षित रहने की सुविधा हो जाती है, इस दृष्टि से धीरे-धीरे अन्य लोगों ने भी पनीर उत्पादन को अपनाया और वर्तमान में पनीर इस गांव की पहचान बन चुका है| इसके फलस्वरुप आज यह गांव पनीर गांव के नाम से जाना जाता है| प्रारंभिक समय में पनीर 25रू प्रति किलो के मूल्य से बिकता था, वर्तमान में इसका मूल्य 300रू प्रति किलो है| प्रारंभ में 30 से 35 परिवार ही पनीर उत्पादन करते थे, परंतु वर्तमान समय में रोतों की बेली सड़क मार्ग का उत्तरकाशी नगुण मार्ग से जुड़ने के कारण अब 90% परिवार पनीर का उत्पादन कर 15 से 35 हजार रुपए प्रतिमाह अर्जित करते हैं| यहां पर उत्पादित पनीर उत्तरकाशी -मसूरी -देहरादून के बाजारों तक पहुंचता है| गांव ने दूध के सुगम- सुलभ व्यावसायिक प्रसंस्करण द्वारा पनीर निर्माण से पश्चिमी गढ़वाल में अपनी पहचान बना ली है| ऑर्गेनिक उत्पादन के रूप में इसकी मांग बड़े नगरों में आसानी से हो सकती है| पशुपालन के लिए चारा- चारागाह ऊपरी घाटियों में भी सुलभ होते हैं, जहां पर पनीर का उत्पादन कर सहकारी समितियों के माध्यम से विपणन किया जा सकता है| यह कृषि की अपेक्षा वन्यजीवों के हानी से सुरक्षित है| आवश्यक है कि उत्पादन अनुकूल सभी क्षेत्रों में बढ़ाया जाए, इसके लिए सरकार द्वारा प्रचार प्रसार तथा समर्थन आवश्यक है| पनीर उत्पादन द्वारा उत्तराखंड अपनी एक विशिष्ट पहचान बना सकता है|

साग सब्जी व नगदी फल फसलें- रोतों की -बेली गांव में नगदी फसलों एवं फल उत्पादन व्यवसाय भी बहुत तीव्रता से बढ़ रहा है, जिसमें आलू, गोभी, मटर, शिमला मिर्च, मूली राई आदि सब्जियों का व्यापार उत्तरकाशी, देहरादून के नगरों के लिए किया जाता है| नगदी फसलों का उत्पादन लगभग गांव के सभी परिवार करते हैं| कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक होने के कारण लोगों के पास कृषि भूमि बहुत

कम है, जिसका सीधा प्रभाव उत्पादन पर पड़ता है| सर्वेक्षण में 50 परिवारों के उत्पादन को निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है|

तालिका 1: रोतों की बेली ग्राम में नगदी फसलों का उत्पादन (प्रति परिवार) कुंतल

परिवारों की संख्या	आलू	मटर	गोभी	हरी सब्जीयां
2 से नीचे	12	34	5	15
2-4	20	10	22	11
4-6	14	5	16	11
6- से ऊपर	4	1	7	13

श्रोत- प्राथमिक

फलों के उत्पादन में खुमानी,आडू, पलम, कीबी का उत्पादन भी किया जाता है| पशुपालन में कठिनाइयों के कारण पनीर का उत्पादन कुछ लोग कर पाते हैं|

पर्यटन की संभावना एवं विकास- रोतों की -वेली गांव का प्राकृतिक सौंदर्य अत्यधिक मनमोहक है, जो चारों तरफ से ही पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ अवतल ढाल पर मध्यम ढाल लिए हुए पूर्व से पश्चिम की तरफ फैला हुआ है। इसके ऊपरी भाग में बांज, बुरांस व देवदार के जंगल सैलानियों को अपनी और आकर्षित करते हैं। मध्य भाग में मध्यम ढाल पर लहलहाती हुई सब्जियां, सेव, पलम, खुमानी के लदे हुए वृक्ष अत्यधिक सुंदर लगते हैं। मार्च अप्रैल में चारों तरफ बुराँस के लकदक वृक्ष इस क्षेत्र की नैसर्गिक छटा को और भी निखारते हैं। शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण हमेशा जलवायु अनुकूल रहती है, जिसका प्रभाव यहां के पर्यटन पर भी दिखाई दे रहा है।

मसूरी धनोल्टी के निकट स्थित होने तथा अत्यधिक सुंदर प्राकृतिक दृश्य व स्वास्थ्यवर्धक जलवायु होने के कारण वर्तमान समय में पर्यटन का विकास भी यहां पर तीव्र गति से हो रहा है| उत्तराखंड सरकार की होमस्टे योजना का भी यहां पर विकास दिखाई दे रहा है| यहां पर मुख्य रूप से होटल, होमस्टे काफी विकसित अवस्था में है| तीन बड़े होटल, 5 से 6 रेस्टोरेंट, तथा एक एप्पल गार्डन होमस्टे है, जिसमें 6 कॉटेज बने हुए हैं| होटल में प्रति कमरा किराया 3000से 4000रु तथा होम स्टे में किराया 1000 से 2000रु तक रहता है, जो यात्रा सीजन में बढ़ जाता है|

निष्कर्ष -इस क्षेत्र की स्थानीय जनता ने अपने अथक प्रयास से स्वरोजगार के तहत पनीर उत्पादन,नगदी फसलों का उत्पादन, तथा पर्यटन विकास को अपनी आर्थिकी का मुख्य आधार बनाया है, जिसे भविष्य में और भी अधिक विकसित करके इस क्षेत्र के विकास को और अधिक बढ़ाया जा सकता है|

लेख